INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. बी.के. गुप्ता, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग
आशीष कुमार द्विवेदी, शोधार्थी, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट–ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु बाराबंकी जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के 200 विद्यार्थियों का चयन किया। अध्ययन के परिणाम में यह पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर है तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में भी सार्थक अंतर है।

मुख्य शब्दावली– उच्चतर माध्यमिक स्तर, सृजनात्मकता।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज में ही समायोजित होकर रहना है। मनुष्य को सृजनशील प्राणी भी कहा जाता है उसमें विभिन्न प्रकार से चिन्तन कर सृजनात्मकता के गुण विकसित होता है। जो समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होता है। व्यक्ति के अन्दर सृजनात्मक शक्ति विद्यमान होती है। समाज में बहुत से आविष्कार सृजनात्मकता पर ही आधारित है। उदाहरण स्वरूप हम कह सकते हैं कि जब एक शिल्पकार अच्छी मूर्ति बनाता है, जब एक कविया रचनाकार अच्छी कविता या रचना करता है या जब एक इंजीनियर नई तकनीक का प्रयोग कर मशीन का निर्माण करता है तो वह अपनी सृजनात्मकता का परिचय देता है। हमारे समाज का विकास विज्ञान पर निर्भर है। अतः विज्ञान को विकसित करने के लिए एक चिंतन की आवश्यकता है। जिस कारण सृजनात्मकता को महत्व देकर हर प्रयास करना चाहिए की प्रत्येक व्यक्ति सृजनात्मक हो।

सृजनात्मकता का अर्थ और परिभाषा

सामान्य शब्दों में कहा जाये तो कुछ सार्थक नवीन ओर अनोखी सोच व अनोखा करने की क्षमता ही सृजनात्मकता कहलाती है, किन्तु यह तभी सार्थक सिद्ध होगी जब इस अनोखी सोच में उपयोगिता का गुण विद्यमान होगा। सृजनात्मक पर अनेक विद्वानों ने अपने–अपने मत को सामिल किया है जो परस्पर एक दूसरे से भिन्न हैं। स्टेमनर एवं कारवारली "पूर्ण रूप में अथवा आंशिक रूप में नवीन अन्यता का उत्पादन सृजनात्मकता का द्योतक है" ड्रेवडॉल के अनुसार– "सृजनशीलता व्यक्ति की वह क्षमता है जिससे वह कुछ ऐसी नयी चीजों, रचनाओं और विचारों को उत्पन्न करता है, जो नये होत हैं और उससे पहले उसे ज्ञात नहीं होते।" गिलफोर्ड के अनुसार– "कभी सृजनात्मकता से अभिप्राय क्षमता से होता है, कभी सृजनात्मक रचना से तथा कभी सृजनात्मक उत्पादकता से।" अनेक विद्वानों के बाद सृजनात्मकता की स्पष्ट परिभाषा ड्रेवडाल ने सन् 1956 में दिया। "सृजनात्मकता चिन्तन या सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे वह कुछ नयी चीजों, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है व जो पहले से ज्ञान नहीं होता। यह एक काल्पनिक क्रिया या चिन्तन संश्लेषण हो सकता है। इसमें गत अनुभूतियों से उत्पन्न सूचनाओं का एक नया पैर्टन और सम्मिक्षण सम्मिलित हो सकता है। यह निश्चित रूप से उद्देश्यपूर्ण या लक्ष्य होता है न कि एक निराधार स्वप्न चित्र होता है। यह वैज्ञानिक, कलात्मक या साहित्यिक रचना के रूप में हो सकता है।"

सृजनात्मकता की विशेषतायें

- पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ सृजनात्मकता विद्यमान होती है। सृजनात्मक सर्वव्यापी है।
- सृजनात्मक चिंतन से किसी नई वस्तु या विचार की उत्पत्ति होती है।
- सृजनात्मकता व्यक्ति में जन्मजात होती है किन्तु उसे बाहरी प्रशिक्षण के द्वारा और विकसित व निखारा जा सकता है।
- सृजनात्मक चिंतन में व्यक्ति सार्थक एवं लक्ष्यपूर्ण चिन्तन करता है।
- सृजनात्मक चिंतन से व्यक्ति की आंतरिक प्रतिभा का विकास होता है।
- सृजनात्मक व्यक्ति के आंतरिक ज्ञान पर निर्भर करती है। व्यक्ति के अंदर अतिरिक्त ज्ञान जितना होगा, उसकी सृजनात्मकता उतनी ही प्रखर होगी।

अध्ययन के उद्देश्य

1 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

2 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

3 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध की विधि –

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य समस्या का हल ढूंढना है। वर्तमान समय में शोध कार्य हेतु अनेक शोध विधियों का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में बाराबंकी जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में बाराबंकी जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के 200 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया जिसमें 100 छात्र एवं 100 छात्राओं को सम्मिलित किया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

परिकल्पना 1 – उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका – 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिकल्पना की सार्थकता
षहरी विद्यार्थी	100	21.77	2.97	4.07	अस्वीकृत
ग्रामीण विद्यार्थी	100	19.90	3.51		

व्याख्या–

उपर्युक्त तालिका–1 से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास का मध्यमान 21.77 एवं मानक विचलन 2.97 है। वही उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास का मध्यमान 19.90 एवं मानक विचलन 3.51 है। मध्यमान एवं मानक विचलन से टी परीक्षण का मूल्य 4.07 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना 2 – उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका – 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिकल्पना की सार्थकता
छात्र	50	17.52	2.11	2.31	अस्वीकृत
छात्रा	50	18.63	2.67		

व्याख्या–

उपर्युक्त तालिका–2 से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्रों के सृजनात्मक विकास का मध्यमान 17.52 एवं मानक विचलन 2.11 है। वही उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय की छात्राओं के सृजनात्मक विकास का मध्यमान 18.63 एवं मानक विचलन 2.67 है। मध्यमान एवं मानक विचलन से टी परीक्षण का मूल्य 2.31 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर पाया जाता है।

परिकल्पना 3 – उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका – 3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिकल्पना की सार्थकता
छात्र	50	16.21	3.48	2.15	

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

छात्रा	50	17.54	2.66		अस्वीकृत

व्याख्या–

उपर्युक्त तालिका–3 से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्रों के सृजनात्मक विकास का मध्यमान 16.21 एवं मानक विचलन 3.48 है। वही उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय की छात्राओं के सृजनात्मक विकास का मध्यमान 17.54 एवं मानक विचलन 2.66 है। मध्यमान एवं मानक विचलन से टी परीक्षण का मूल्य 2.15 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक विकास में सार्थक अंतर पाया जाता है।

निष्कर्ष

वर्तमान में विभिन्न देशों में कई प्रकार के प्रयोग और आविष्कार हो रहे हैं। इसमें उनकी परिश्रम के साथ–साथ उनकी सृजनात्मक सोच भी शामिल है। हर व्यक्ति में सृजनात्मकता कुछ न कुछ होती है। इसे सही समय पर उचित और अथक प्रयास से बढ़ाया भी जा सकता है। जिसके लिये बालक के के घर परिवार के साथ साथ अध्यापक और विद्यालय संगठन का भी योगदान होता है। सृजनात्मकता का विकास तब संभव है जब बालक को वैसा वातावरण प्रदान किया जाये। इसमें मौलिकता विद्यमान होती है। समय समय पर इसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि इसे और नवीन व प्रखर बनाया जा सके। सृजनात्मकता से बालक का सर्वांगीण विकास के साथ–साथ उसके समाज व राष्ट्र का भी विकास होता है। अतः इसे निरंतर प्रयास से सृजनशील से और अधिक सृजनशील बनाना हमारा लक्ष्य होना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर सुरेशः शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल पब्लिकेशन, पृ.403।
2. भटनागर सुरेशः शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल पब्लिकेशन, पृ. 404।
3. सिंह ए.के.: उच्च सामान्य मनोविज्ञान।
4. भटनागर ए.वी.: शैक्षिक मनोविज्ञान एवं अधिगम प्रकिया।
5. मंगल एस.के.: शिक्षा मनोविज्ञान।
6. सक्सेना एन.आर.: स्वरूप शिक्षण के नियम तथा पद्धतियाँ, आर. लाल पब्लिकेशन।

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY
ADVANCED SCIENCE INDEX